>

Title: Need to open Central Universities in Bihar.

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली): अध्यक्ष महोदया, देश में करीब 72-74 केन्द्रीय विश्वविद्यालय हैं लेकिन बिहार में एक भी नहीं है, जबकि आबादी और पिछड़ेपन के हिसाब से बिहार में कम से कम छः केन्द्रीय विश्वविद्यालय होने चाहिए। अभी हाल में जो खानापूर्ति के रूप में बिहार को केन्द्रीय विश्वविद्यालय मिला है, भारत सरकार का कहना है कि गया में उसकी स्थापना करना चाहते हैं। राज्य सरकार की मांग है कि मोतिहारी में वह विश्वविद्यालय महात्मा गांधी के नाम पर हो, लेकिन भारत सरकार का कहना है कि गया में खोलना चाहते हैं। इस प्रकार राज्य सरकार और भारत सरकार के बीच टकराव की स्थिति है। केवल भारत सरकार और राज्य सरकार के बीच में टकराव की स्थिति नहीं है। वहाँ मोतिहारी और गया के लोगों के बीच भी टकराव की स्थिति है। वहाँ आंदोलन हो रहे हैं।

अभी हमारे बिहार के माननीय सदस्य सवाल उठा रहे थे लेकिन आपके आश्वासन पर सब अपनी सीट पर चले गए। वे जंतर मंतर पर धरना देने गए हैं कि मोतिहारी में होना चाहिए। दुनिया का कोई भी पंच होगा तो वह मानेगा कि बिहार में एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय से काम चलने वाला नहीं है। इसलिए वहाँ दो विश्वविद्यालय हों। भारत सरकार का कहना है कि गया में हो, तो वहाँ भी होना चाहिए। राज्य सरकार का कहना है कि मोतिहारी में महात्मा गांधी के नाम पर हो और वहाँ ज़मीन दे दी है। पटना यूनिवर्सिटी की मांग भी बहुत दिनों से चली आ रही है। इसलिए तीन केन्द्रीय विश्वविद्यालय बिहार में हों तो वहाँ पिछड़ेपन को देखते हुए संतुलन होगा। उत्तर प्रदेश में आठ डीम्ड यूनिवर्सिटी हैं और बिहार में एक भी नहीं है। वैशाली में ज़मीन है - प्राकृत की, जैन भगवान महावीर की जन्मभूमि है, इसलिए वहाँ भी एक डीम्ड यूनिवर्सिटी हो, यह हमारी मांग है। सरकार इसमें टकराव हटाने के लिए मोतिहारी, गया तथा पटना में केन्द्रीय विश्वविद्यालय खोले तथा वैशाली में डीम्ड यूनिवर्सिटी खोले, वरना वहाँ युद्ध की स्थिति हो रही है। वहाँ संघर्ष हो रहा है। जंतर मंतर पर धरना देने के लिए बिहार के माननीय सदस्य गए हैं। ...(व्यवधान) हुक्मदेव नारायण यादव जी भी गए थे, लेकिन अभी यहाँ आकर बैठ गए और कोई सड़क वाला सवाल यहाँ उठा रहे थे। इसलिए हम सरकार से आग्रह करते हैं कि टकराव की स्थिति को छोड़ दे।

महोदया, आप तो सदन की संरक्षक हैं, कस्टोडियन हैं। आप ही पंचायती फैसला कर दें, हम उस फैसले को शिरोधार्य करेंगे कि बिहार में एक विश्वविद्यालय से काम नहीं होगा, दो-तीन विश्वविद्यालय और होने चाहिए।

अध्यक्ष महोदया : श्री पी.एल.पुनिया का नाम डॉ.रघुवंश प्रसाद सिंह द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध किया जाता है।